

आओ इन्सान बने

(हर कदम मानवता की ओर)

पाठ नं 1

नज़र फर्मुदा :

मुफ्ती ख़ुर्शीद अनवर साहब

मोहतमिम दारुल उलूम हसनपुर

सदर जमियत-ए-उलमा ज़िला अमरोहा

व खलीफ़ाए मुजाज़ महबूबुल उलमा वस्सुलहा हज़रत

मौलाना पीर जुल्फिकार अहमद साहब

नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

आओ इन्सान बने

(हर कदम मानवता की ओर)

सारे संसार के इन्सान परम ईश्वर प्रमात्मा की रचनाओ मे सर्वश्रेष्ठ रचना है। सारे संसार के इन्सान अपने मूल शारीरिक और मूल मानसिक व्यवहार से सिर्फ एक ही ईश्वर की रचना होने को सिद्ध करते है।

ईश्वर ने हमे इन्सान बनाया है यह ईश्वर का उपकार है। ईश्वर जिस इन्सान को इन्सानियत का गुण देता है उसे इन्सानो में श्रेष्ठ कर देता है।

दोस्तो! संज्ञा की पहचान उसके विशेषण से होती है इन्सान संज्ञा है तो इन्सानियत उसका विशेषण है। जिसके पास इन्सानियत का गुण नहीं वह इन्सान कहलाने के योग्य नहीं। इस युग में हर मानव से मानवता का गुण कम होता जा रहा है और मानव सभ्यता कम होती जा रही है। इसका मूल कारण यह है कि हर इन्सान ने उस एक ईश्वर को छोड़ कर अपने मन की इच्छाओं को पूजना शुरू कर दिया है। हर इंसान अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए इन्सानियत के गुणों को बली पर चढ़ाने के लिए तैयार है। ईश्वर के

इस अनमोल उपहार 'इन्सानियत' की तरफ कदम बढ़ाने के बजाए इन्सान अपने मन की इच्छाओं की तरफ तेज़ी से कदम बढ़ा रहा है, जिसके कारण आज सारे संसार में हर इन्सान अपने जैसे इन्सानों और इन्सानियत का दुश्मन बन गया है। इन्सान यह भूल गया है कि हर इन्सान एक ही ईश्वर की रचना है क्योंकि इन्सान अपने मन की इच्छाओं का दास बन चुका है इसलिए इन्सान उस एक ईश्वर को भूल गया है और जब इन्सान उस ईश्वर को भूल गया है तो उसके आदेश यानी इन्सानियत को कैसे याद रख सकेगा यही

कारण है के जो जीव इन्सानियत के कारण सर्वश्रेष्ठ था आज जानवर से भी बदतर हो गया है। दोस्तो! हमारे नौजवान साथी भिन्न भिन्न कोर्स कर रहे हैं ताकि वह समाज में इज़्जत पा सके लेकिन समाज में इज़्जत पाने के लिए जिस गुण की आवश्यकता है, न तो माता-पिता अपने बच्चों को वह कोर्स करा रहे हैं और न बच्चे उस कोर्स को कर रहे हैं।

उस कोर्स का नाम इन्सानियत का कोर्स या मानवता का कोर्स। हमने ईश्वर के उपकार से इस कोर्स की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कदम

बढ़ाया है जिसे हम कहते हैं “आओ इन्सान बने” ।

इन्सानियत के कुछ गुण

- (1) इन्सान वह है जिसमें इन्सानियत का गुण हो ।
- (2) इन्सानियत अपने और दूसरे इन्सानों के दुख-दर्द को महसूस करने का नाम है ।
- (3) इन्सानियत दूसरे इन्सानों के प्रति दयालुता रखने का नाम है ।
- (4) इन्सानियत अपने से ज़्यादा दूसरे इन्सानों का ध्यान रखने का नाम है ।

- (5) इन्सानियत बड़ों का आदर करने का नाम है।
- (6) इन्सानियत छोटों से मुहब्बत करने का नाम है।
- (7) इन्सानियत अमीर हो या गरीब दोनों को बराबर सम्मान देने का नाम है।
- (8) इन्सानियत अपने माता-पिता, बहन-भाई और पत्नी से अच्छा व्यवहार करने का नाम है।
- (9) इन्सानियत अपने पड़ोसियों के दुख दर्द में काम आने का नाम है।
- (10) इन्सानियत अपने मोहल्ले, शहर,

देश के हर वर्ग के इन्सानों से बराबरी का व्यवहार करने का नाम है।

(11) इन्सानियत रास्ता चलते बूढ़ों और बच्चों की मदद का नाम है।

(12) इन्सानियत अपने स्वार्थ को छोड़ कर इन्सानों के लिए अच्छे काम करने का नाम है।

(13) इन्सानियत बुरे कामों से लज्जा का नाम है, जिसके पास लज्जा (शर्म) नहीं तो जो चाहे करे उसका इन्सानियत से कोई रिश्ता नहीं।

(14) इन्सानियत दूसरो से सभ्य और दयालुता का व्यवहार करने का नाम

है, यह व्यवहार दिल से होना चाहिए वरना वह व्यक्ति पाखंडी कहलाएगा इन्सान नहीं ।

- (15) इन्सानियत संयम बनाए रखने का नाम है, चाहे लाभ हो या हानि । इन्सान के जन्म के समय ईश्वर उसे सारा संसार दे देता है और मृत्यु के समय सारा संसार ले लेता है, इन्सान का अपना कुछ नहीं मगर ईश्वर उसका है ।

- (16) इन्सानियत लोगों को अच्छी बात सिखाने का और बुरी बात से रोकने का नाम है, हमारे समाज की भलाई

इसी पर निर्भर है।

- (17) इन्सानियत केवल सच का आचरण करने का नाम है।
- (18) इन्सानियत अच्छे काम करके खुश होने और बुरे काम करके दुखी होने का नाम है।
- (19) इन्सानियत शारीरिक और मानसिक अश्लीलता से बचे रहने का नाम है।
- (20) इन्सानियत दूसरों की कोताहियों और गलतियों को माफ करने का नाम है।

माफ करें

(अपनी और दूसरो की खुशी के लिए)

किसी को माफ करने की अपनी एक खुशी होती है। दूसरो की कोताही और गलती को माफ करने में एक मज़ा है, यह मज़ा उसी को मिलता है जिसको ईश्वर ने दयालुता का गुण दिया है। इन्सानियत के इतिहास में एक ऐसी ही सच्ची कहानी भी गुज़री है। जिस में दस हजार की फौज़ के मालिक ने अपने पर जुल्म करने वालो को उस दिन माफ कर दिया जिस दिन उसने उस शहर को कब्जे में लिया। इन्सानो को तो उसने माफ ही किया साथ में उसने

कहा “सुनो साथियो न किसी औरत न किसी बच्चे और न किसी पेड़ को नुकसान पहुँचाना जो तुमसे मुकाबला करे उसी से मुकाबला करना।”

यह दयालु व्यक्ति और कोई नहीं मुहम्मद (स०व०) थे क्योंकि अल्लाह कुरान में कहते हैं “हम ने तुम्हे संसार के लिए रहमत बनाया यानी तुम्हे दयालु बनाया है।” (सू. अल-अम्बिया, आ. 107)

**मक्का शहर पर मुस्लिमानो के
कब्जे की कथा**

मक्का शहर मुहम्मद (स०व०) का शहर था आप ने यही जन्म लिया था।

आप बचपन से ही दयालु और सभ्य थे जैसे जैसे आप बड़े होते गए मक्का शहर के लोग आप को अमीन (ईमानदार) कहने लगे, मक्का में सिर्फ आपको ही शब्द 'अमीन' से लोग पुकारते थे। फिर जब आप 40 वर्ष के हुए तो आप पर ईश्वर वाणी यानी कुरान की शिक्षा ईश्वर (अल्लाह) की तरफ से आप पर प्रकट हुई।

अल्लाह ने आपको आदेश दिया कि संसार के लोगो को मेरा संदेश पहुँचा दो की "ईश्वर एक है और ईश्वर ही पूज्य है, और मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं।" तो सबसे

पहले मुहम्मद साहब ने अपने शहर वासियों को यह संदेश पहुँचाया, बस उसी समय वो लोग जो मुहम्मद को बचपन से सच्चा, ईमानदार और दयालु कहते आ रहे थे आज वही लोग उन्हें झूठा कहने लगे। लेकिन जो लोग एक ईश्वर में आस्था रखते थे उन लोगों को मुहम्मद की बात सच्ची लगी और उन्होंने उनका साथ दिया, बस उस दिन से मक्का के लोगों ने मुहम्मद साहब और उनके साथियों को बहुत तकलीफें दी और सताया। मक्का के लोगो ने आपको 13 वर्ष तक तकलीफ दी और आप उनकी तकलीफो को बरदाशत

करते रहे क्योंकि ईश्वर के आदेश के बिना आप मक्का शहर नहीं छोड़ सकते थे। परन्तु 13 वर्ष में आपको ईश्वर की तरफ से आदेश मिला के मक्का शहर से अपने साथियों को मदीना शहर भेज दें, लेकिन आपको अभी भी आदेश नहीं मिला था कुछ समय बाद आपको भी मदीना शहर जाने का ईश्वर से आदेश मिल गया, फिर मुहम्मद साहब ने मदीना शहर से ईश्वर के संदेश को लोगो तक पहुँचाना शुरू किया और जो लोग एक ईश्वर में आस्था रखते थे वो सब उनके साथ हो गए। शुरू में मुहम्मद साहब के साथी कम थे लेकिन

जैसे-जैसे ईशवाणी यानी कुरान आप पर प्रकट होता रहा और आप इस ईशवणी को लोगों तक पहुँचाते रहे। जिससे एक ईश्वर में आस्था रखने वाले आपके पास आते और ईश्वर के संदेश में अपनी आस्था प्रकट करते और आपके साथ हो जाते, 8 वर्ष में मुहम्मद साहब के साथियों की संख्या 10 हजार तक पहुँच गई।

इन 10 हजार साथियों के साथ आप मक्का को कब्जे में करने के लिए जब मक्का शहर में पहुँचे तो आपकी आँखें नम थीं आपकी गर्दन झुकी हुई और आपके दिल में दयालुता का भाव था और आपके

चेहरे पर सख्ती के बजाए नरमी थी। आपकी आँखें नम इसलिए थी कि मक्का आपका जन्म स्थल था और मक्का के लोगो के कारण आपने शहर को छोड़ा था आज उसमे आप इज्जत के साथ आ रहे थे। गर्दन इसलिए झुकी थी क्योंकि आप अहंकार और घमंड से हर समय बचते थे। और ईश्वर ही की तारीफ पसंद करते थे, अब जब आपको ईश्वर ने एक शहर पर कब्जा दिया तो आपने अपने को घमंड और अहंकार से बचाने के लिए अपनी गर्दन झुकाली। दिल की दयालुता आपने ऐसे दिखाई कि अपने साथियो से कहा

“सुनो साथियो न किसी औरत न किसी बच्चे और न किसी पेड़ को नुकसान पहुँचाना सिर्फ उसका जवाब देना जो तुमसे मुकाबला करे।”

उस रात मक्का की औरतें सोचने लगीं के “मुहम्मद के लोग अब हमारे पतियों को मार देंगे, हमारे बच्चों को मार देंगे और हमारी इज्जतों को लूट लेंगे।” और यह बातें सोच सोच कर घबरा रही थीं क्योंकि मुहम्मद स०अ०व० पर और मुहम्मद स०अ०व० के साथियो पर मक्का वालो ने बहुत जुल्म किया था उनके घरों पर कब्ज़ा किया था, उनकी औरतों की

बेइज़्ज़ती की थी, उन पर हर तरह का जुल्म किया था इसलिए वो लोग घबरा रहे थे। मगर उस रात ऐसा कुछ नहीं हुआ।

अगले दिन मुहम्मद साहब ने सब लोगों को बुला भेजा तो सब आपके पास आए। मुहम्मद साहब ने पूछा के आज तुम मुझसे क्या उम्मीद रखते हो तो उन लोगो ने कहा, “आप एक दयालु भाई है और एक दयालू ईश्वर के दूत (नबी) हैं। उनकी इस बात पर आपने कहा, “जाओ सबको मैंने माफ किया।”